फरीदाबाद

मजदूर समाचार

दुनियां को बदलने के लिए मजदूरों को खुद को बदलना होगा

नई सीरीज नम्बर 84 जून 1995

इस अंक में

- केल्विनेटर
- विद्यार्थी की बातें
- जे वी इलेक्ट्रोनिक्स
- पूजा इलेक्ट्रोप्लेटिंग
- ललित फैब्रिक्स

नारद मुनि बाल-बाल बचे

अखबार के मई अंक के लिये हम रमते जोगी की 36 घन्टे के वर्किंग डे की बातें जब आराम से कलमबद्ध कर रहे थे तब मुनिश्री फैक्ट्रियों के दौरे पर दौरे करने लगे, एक दिन में एक-दो की जगह दस-दस, बीस-बीस फैक्ट्रियों में जाने लगे। नारद जी पर जुनून-सा सवार हो गया था और द्रुत गति से वीणा के तारों को झँझोड़ते मुनिश्री पंचम नहीं बल्कि पचपनम स्वर में स्पीड - रफ्तार - और तेज - गति और बढाओ - ध्यान से - सम्पूर्ण ध्यान से - एक सौ दस परसैन्ट अटेन्शन - 150 पीस - नहीं, 200 पीस - हाँ, 450 पीस बनाओ शब्दों - वाक्यांशों - वाक्यों और उनके मिक्सचर को उगलने लगे थे। रात एक बजे छूटे एस्कोर्ट्स की सैकेन्ड शिफ्ट के वरकर कमरों पर पहुँच सोने को होते तब देर रात को अथवा केल्विनेटर के मजदूरों की मुँह अन्धेरे ही सुबह छह बजे की शिफ्ट की तैयारी होती है उससे भी घन्टा-भर पहले नारद जी हमें झकझोर कर जगाने लगे। एक साँस में "सोवत है सो खोवत है" और "आराम हराम है" कह कर मुनिश्री हमें फैक्ट्रियों की बातें इस रफ्तार से बताने लगते कि ड्यूटी के लिये भागते वरकर जैसे रेलवे लाइन क्रास करते समय तन की सुध और मन की धुन का घालमेल कर तन की धुन में जब-तब ट्रेन से कट मरते हैं कुछ वैसा ही हाल हमारे तन-मन का होने लगता। और नारद जी की कर्कश दर कर्कश होती वाणी हमें बरबस फोरजिंग के हैमरों के बीच खड़े मजदूरों की स्थिति में धकेल कर कानों पर रहम की गुजारिश करने को मजबूर करने लगी। साथ ही, रमते जोगी को अपना शान्त - सौम्य चरित्र खोता देख हमें दुख हुआ। बोलते-बोलते एक दिन झाग से नारद जी का मुँह ज्यादा भर गया और भर्राये गले से आवाज निकलनी बन्द हो गई तब हमें बोलने का अवसर मिला। हमने जय श्री आराम कह कर मुनिश्री को आरामचन्द्र जी का महत्व बताना आरम्भ ही किया था कि खर-खर की आवाज पर चौंके। नारद जी की आँखें तर थी और चाबुक की चोट पर गूँगे की नाँई बोलने की कोशिश कर रहे थे। हम अवाक रह गये। सन्नाटे में झागों भरे मुँह और भर्राये गले से निकली मुनिश्री की वाणी हमारे मस्तिष्क पर अंकित हो गई –

"बच्चो तुम समझते नहीं हो। मशीन के पुर्जों की रफ्तार और उन पर दाब - बोझ मशीन तय करती है। इनसान मशीन के पुर्जे, घटती साइज के पुर्जे बने हैं। ऐसे में 'समय-काल अनुसार' के ब्रह्मवाक्य से भला कोई बच सकता है क्या? खुद को खुदा - ब्रह्मा समान मानने वाला तो क्या, स्वयं ब्रह्मा भी इस मायने में स्वतंत्र नहीं हैं और फिर मैं तो ठहरा मात्र ब्रह्मा का पुत्र ! दूर क्यों जाते हो, यहाँ फरीदाबाद में ही आयशर ट्रैक्टर फैक्ट्री देखो। पों-पों करती मशीनों के आदेशों पर नाचते मनुष्यों को देख कर हँसी और रोना साथ-साथ आते हैं। ताश का पत्ता होते हुये भी गुलाम का गोल्ला चाकर की चाकरी करने की फूटी किस्मत पर शर्म से लाल हो रहा है और इनसान... फरीदाबाद में ही हजारों लोग आयशर फैक्ट्री में नौकरी करने को मजबूरन लालायित हैं ! जानते हो इसी फैक्ट्री में 1100 मजदूर महीने में 1500 ट्रैक्टर और पार्ट्स बनाते थे जबकि अब 2001 ट्रैक्टर व पार्ट्स 450 मजदूर महीने में बनाते हैं। मशीनों की पों-पों पर तनते तन और बेचैन होते मन तो इसकी अभिव्यक्ति मात्र हैं। खैर, मुझे जल्दी है। दिल्ली में भी कई काम हैं और फिर सुबह-सवेरे बम्बई के लिये फ्लाइट पकड़नी है इसलिये इस सब का क्या हश्र होगा यह अपने विद्वान रिसर्च वरकर से विचार-विमर्श के बाद बम्बई से खत में लिखूँगा।"

और तन की धुन में अपनी प्रिय वीणा को मजदूर लाइब्रेरी में ही छोड़ नारद जी बाटा चौक से बस पकड़ने दौड़ पड़े। हम भी मई अंक को रमते जोगी की बातों से भर कर अखबार बाँटने में बिजी हो गये। नारद जी की 24 घन्टे के दिन के 36 घन्टे के वर्किंग डे - कार्य दिवस में बदल जाने की सहज पर गूढ बात की तस्दीक इस तकलीफदायक तथ्य ने भी की कि अखबार पढने वाले हजारों मजदूरों में से किसी के पास भी लाइब्रेरी आ कर रमते जोगी के विश्लेषण पर टीका-टिप्पणी करने की फुर्सत नहीं थी। भागते-भागते अखबार लेते मजदूर हाव-भाव से हमसे अपनी बातें कहते हैं।

महीना होने को आया और नारद जी का कोई खत नहीं। हमें चिन्ता हुई। भागमभाग के जुनून ने मुनिश्री के साथ कोई होनी - अनहोनी तो नहीं कर दी? भागमभाग में पोस्टमैन ने खत इधर-उधर तो नहीं फेंक दिया? दिन ब दिन हमारी चिन्ता बढ रही थी। समय की बचत के लिये डाकिये आटोपिन झुग्गियों के खतों को तूफानी के साइकिल रिपेयरिंग खोखे पर डाल जाते हैं। हमने वहाँ दिन में दो-दो चक्कर लगाने शुरु किये। 12 बजे वाला चक्कर लगा कर खाना खा हम सो जाते हैं। हमारी चिन्ता से वाकिफ तूफानी ने एक दिन साढे तीन बजे हमें उठाया और फोरेन से आया पत्र दिया। नारद जी ने जापान से हमें खत लिखा था –

"जिन्दा हूँ ! जापान की बातें अगले खत में लिखूँगा, पहले दिल्ली-बम्बई फ्लाइट की बातें सुनो। वीणा तुम्हारे यहाँ भूल गया – सम्भाल कर रखना। हाँ तो, मेरे एक वस्त्र में लिपटे अधनंगे बदन और घुटे सिर ने एक सदा मुस्कुराते व सदा चौकन्नी आँखों वाले सज्जन की आँखों में कौतुहलता-भरी उत्सुकता उत्पन्न की। अनायास ही वह सज्जन मुझसे बतियाने लगा। दिल खोल कर बातें करते हुये उसने बताया कि जिन्दगी में पहली बार वह यह कर पाया है, उसकी कैटेगरी के लोगों के होंठ सदा सिले रहते हैं। फ्रान्स में जन्मा और सेल्स लाइन में नौकरी कर रहा वह युवक अत्यधिक काम, तेज - तीक्ष्ण काम और नौकरी छूट न जाये की चिन्ता में मनुष्य से बन्दर बनता जा रहा था। पेरिस से दिल्ली, कार से फरीदाबाद - गाजियाबाद - गुड़गाँव, बंगलौर की फ्लाइट और वहाँ से सिंगापुर - हाँगकाँग - मलेशिया - कोरिया, वापस दिल्ली और फिर पेरिस। यह सब एक हफ्ते में और हर महीने ऐसा एक चक्कर। हवाई जहाज में सोना ही नहीं बल्कि लैप टॉप कम्प्यूटर पर रिपोर्ट भी बनाना... उसकी फ्रान्सीसी पुट वाली अंग्रेजी और मेरी संस्कृत छाप अंग्रेजी जहाज के मनहूस माहौल में कुछ जीवन्तता लाई।

फरीदाबाद में फैक्ट्री मजदूरों द्वारा तन व मन कुचल कर एकाग्रता से तीव्रगति से काम करने सम्बन्धी मेरी बातों में फैक्ट्री मजदूर टाइप एक नौजवान दिलचस्पी ले रहा था। अपना गुबार निकाल चुका फ्रान्सीसी सेल्स वरकर जैसे ही शान्त हुआ, वह दूसरा नौजवान मुझसे बात करने लगा। वह कैमरे का अटेन्डेन्ट था। अपनी ओर इशारा कर उसने बताया कि मनुष्य के मशीन का पुर्जा बन जाने का उससे अच्छा उदाहरण शायद ही हो। टी वी कैमरे का एक दिन का किराया पाँच हजार रुपये है और उसे दिन के 100 रुपये भी नहीं मिलते। वह तो कैमरे की वजह से हवाई जहाज से यात्रा करता है। खर्च बचाने के लिये कैमरे किराये पर लेने वाले ग्रुप और अधिक कमाई के लिये कैमरों को जल्दी वापस लाने के लिये ही कम्पनी उसे कैमरे की पूँछ की तरह हवाई जहाज से दौड़ाते हैं। दिन-भर चली एक शूटिंग खत्म होने के बाद जल्दी से कैमरा पैक कर कलकत्ता से फ्लाइट पकड़ कर कल ही दिल्ली पहुँचा था। हवाई अड्डे से निकलने और कम्पनी के दफ्तर पहुँचने में रात का एक बज गया। वहाँ बम्बई का कार्यक्रम लिये यह टीम मिली। इनका कैमरा तैयार करने में ढाई बज गये। सुबह 6 बजे की फ्लाइट के लिये साढे चार बजे तो निकलना ही था इसलिये दफ्तर में ही एक झपकी ली। यह लोग भी मन्त्री की यात्रा कवर करने में आठ बजा ही देंगे। उसे तो फिर जल्दी से कैमरा पैक कर रात ग्यारह बजे की फ्लाइट पकड़नी है। वापस दिल्ली पहुँचते ही फिर कहीं के लिये उड़ना होगा। शुरु-शुरु में हवाई जहाज में मजा आता था पर अब यह उसे काटने दौड़ता है।

(बाकी पेज दो पर)

नारद मुनि . . . (पेज एक का शेष)

कैमरा अटेन्डेन्ट की बातें सुन कर एक लम्बा छरहरा जवान बोल पड़ा, 'अस्सी तो केल्ले ही कैमरामैन, साउन्ड वाले और कैमरा अटेन्डेन्ट हैं ! और हम मीडिया वरकरों का काम भी साले गोबर को सजाने का है। रवान्डा में मची मार - काट हो चाहे सोमालिया या फिर कश्मीर में, हमें एक पक्ष की फौजों को शान्तिदूतों के रूप में पेश करना होता है। परसों ही तो रवान्डा में भारत सरकार की फौज के खास एँगल से शॉट लेने के लिये मुझे तेज रफ्तार से चलती फौजी गाड़ी से लटक कर कैमरे को पकड़ना पड़ा था। जरा-सी चूक पर हड्डी-पसली एक हो जाती। लो नारद जी, तुस्सी भी एक पैग लो।'

वह कैमरामैन मुझे बहुत थका लगा। टेलीविजन के लिये शूट करते उसका एक पैर लन्दन में होता है तो दूसरा पेरिस में। वह तब जापान में बौखलाये समाज की एक और अभिव्यक्ति, जहरीली गैस से रेल यात्रियों पर हमले को कवर करने जा रहा था। तीव्र - तीक्ष्ण काम की इस जीती - जागती तस्वीर से मैंने बम्बई में रिसर्च वरकर से मिलने का मकसद बताया तो उसने कहा कि काम की तीव्रता - तीक्ष्णता देखनी है तो जापान चलो और मुझे साथ खींच कर बम्बई अड्डे से टोकयो की कनेक्टिंग फ्लाइट में चढ़ गया। रास्ते-भर उसने खूब पी और खूब बातें की। एक बात वह बार-बार दोहरा रहा था, इस रफ्तार पर और यह काम करते-करते वह तीन-चार साल में नाकारा हो जायेगा। मीडिया में ऐसे वरकर 35 तक मुश्किल से टिक पाते हैं। 21वीं सदी के लिये जिस एजाइल प्रोडक्शन की बातें हो रही हैं वह कैमरामैनों, एडीटरों, स्क्रिप्ट लेखकों आदि के लिये अभी से लागू हो गया है।

अमरीका में न्यू यार्क पोस्ट मास्टर के पते पर मुझे खत लिखना क्योंकि मैं जल्द-ही वहाँ जा रहा हूँ। जापान के अनुभवों की रिपोर्ट हवाई जहाज में लैप टॉप कम्प्यूटर पर बना कर भेजूँगा।"

और आधुनिक मुनि का विशेषण लगा कर नारद जी ने अपने हस्ताक्षर किये थे।

हम रुटीन काम में उलझ गये और मुनिश्री को खत भी नहीं लिख पाये थे कि अमरीका से उनका पत्र आ पहुँचा –

"अभी भी जिन्दा हूँ ! जापान स्थित फैक्ट्रियों का अमरीका स्थित फैक्ट्रियों पर भारी पड़ना समझ में आ गया है। इसके पहले मास प्रोडक्शन लाइन के जरिये दुनियाँ-भर में छा गये अमरीका स्थित कारखानों का रहस्य भी समझ में आ गया है। जिसे अमरीकी दबदबा कहा जाता था उसका असल राज एक मजदूर से एक मिनट में 45 सैकेन्ड काम लेने का जुगाड़ था। और आज जिसे जापानी चमत्कार कहा जाता है उसकी जड़ में वहाँ स्थित फैक्ट्रियों में एक मजदूर से एक मिनट में 57 सैकेन्ड काम लेना है। हर 20 सैकेन्ड में वरकर को 22 शारिरिक क्रियायें करनी पड़ती हैं। मैंने टोयोटा कार फैक्ट्री में यह ट्राई किया। घन्टे-भर में ही मेरा तन तार-तार होने लगा था और मन शून्य में समाने लगा था कि बगल में धड़ की आवाज से मुझे होश आया। मेरी बगल में प्रोडक्शन लाइन पर काम कर रहा भला-चँगा वरकर अचानक गिर गया था। तत्काल इमरजैन्सी वाले उसे उठा कर चले तो मैं भी पीछे-पीछे हो लिया। वह मजदूर मरने के बाद गिरा था। जापान में यह एक सामान्य घटना हो गई है। हर क्षेत्र में अत्यधिक तीव्र व तीक्ष्ण काम की वजह से भले-चँगे कार्य आरम्भ करते बन्दे अचानक मर जाते हैं। ऐसी मौतों के लिये जापानी भाषा में एक नये शब्द, करोश, की सृष्टि हुई है। एक्सपेरीमेंट के चक्कर में मैं तो मौत के मुँह में जा रहा था।

जापान में बच्चों द्वारा बढती संख्या में आत्महत्या के तथ्य से लोगों ने मुझे अवगत कराया तब मुझे जहरीली गैस से आत्म-विध्वंस से भी अधिक तकलीफ हुई।

मैं रोज पोस्ट आफिस जा कर तुम्हारे खत की पूछता हूँ। लिखो। अगले पत्र में तुम्हें अमरीका में अपने अनुभवों के बारे में लिखूँगा।"

नारद जी का पत्र मिलते ही हमने उन्हें लौटती डाक से पत्र लिखा। लेकिन मुनिश्री को हमारा खत नहीं मिला क्योंकि तीन दिन बाद ही मिले पत्र में उन्होंने लिखा था –

"अलविदा ! पृथ्वी पर और रुकना मेरे बस में नहीं है। जापान में तो प्रयोग के चक्कर में जान चली जाती पर यहाँ तो दो बार गोलियों से बाल-बाल बचा हूँ। मैं देवलोक जा रहा हूँ। उम्मीद है मेरे बिना मिले लौट जाने का कारण पत्र पढ़ कर समझ जाओगे।

तुम्हें पिछला खत डाल कर मैं अगले दिन पोस्ट आफिस तुम्हारे पत्र की बाबत पूछने गया तब वहाँ अफरा-तफरी मची थी। क्या देखता हूँ कि एक पोस्टल वरकर बन्दूक हाथ में लिये गुस्से में दहाड़ रहा है। माजरा समझ पाऊँ उससे पहले ही उसने दनादन गोलियाँ दाग कर एक मैनेजर और दो सुपरवाइजरों को मार डाला तथा फिर खुद को गोली मार ली। एक गोली मेरे कान को छूती हुई निकली। यह सब इतनी जल्दी हुआ कि पाँच मिनट बाद सायरन बजाती पुलिस की गाड़ियाँ पहुँची तब मुझे और अन्य लोगों को होश आया।

साँस थोड़ी ठीक से चली तब मैंने घटना का कारण जानने के लिये पूछताछ की। अमरीका में पोस्ट आफिसों में पोस्टल वरकरों द्वारा गोली चलाना कुछ समय से सामान्य-सी घटना बन गई है। डाकखानों में वरकर लगातार घटाये जा रहे हैं और डाक सामग्री बढ रही है। अत्यधिक तीव्र व तीक्ष्ण काम करने को मजबूर पोस्टल वरकरों का गुस्सा अधिकाधिक हिंसक रूप ले रहा है। जवाब में मैनेजमेंट खुफिया तन्त्र को और सक्रिय कर रही है तथा अनुशासन की तलवार पर धार लगा रही है।

डाकखाने की घटना से मैं हिल गया था पर फिर भी मैंने अगले दिन फोर्ड मोटर फैक्ट्री का अपना दौरा कैन्सल नहीं किया। फोर्ड फैक्ट्री पहुँचा तो वहाँ भी मुझे माहौल बहुत गर्म मिला। जनरल मोटर कम्पनी की ही तरह फोर्ड भी वरकरों को कम करने और वर्क लोड बढाने में जुटी है। मंडी की होड़ में बने रहने के लिये यूँ भी मोटर कम्पनियाँ 21वीं सदी के आरम्भ में एजाइल प्रोडक्शन नाम की पद्धति पर रिसर्च करवाने वाली अमरीका स्थित कम्पनियों में अगुआ हैं। एजाइल प्रोडक्शन में चन्द अत्यन्त कुशल विशेषज्ञ परमानेन्ट होंगे और बाकी वरकरों को कार्य-विशेष के लिये ठेकों पर लिया जायेगा। जापान में मजदूर से एक मिनट में 57 सैकेन्ड काम लेने की पद्धति को पीटने की स्कीम है यह। इक्कीसवीं सदी में भी मिनट में 60 सैकेन्ड ही होंगे पर एजाइल प्रोडक्शन पद्धति से मजदूर से एक मिनट में 80 सैकेन्ड काम लेने की अमरीका स्थित मैनेजमेंटों की योजना है। 21वीं सदी को आने में अभी पाँच साल बाकी हैं पर एजाइल का अभ्यास मैनेजमेंटों ने अभी से आरम्भ कर दिया है। जनरल मोटर ने हाल ही में तीन लाख तीस हजार मजदूरों में से 80 हजार निकाल दिये हैं तथा 50 हजार को और निकालने की तैयारी है। इसी तर्ज पर फोर्ड मैनेजमेंट आगे बढ रही है। इस सिलसिले के चलते मजदूरों का गुस्सा बढ़ता जा रहा है। कहीं डंकल-गैट को इसकी जड़ में मान जनरल मोटर के एक डिसमिस वरकर के लड़के ने डंकल-गैट की हिमायती अमरीका सरकार के ओकलाहामा स्थित दफ्तर को बम से उड़ा दिया है तो कहीं मैनेजमेंटों से यूनियनों के दीर्घकाल से सौहार्दपूर्ण सम्बन्धों ने यूनियनों के प्रति मजदूरों की नफरत को विस्फोटक रूप दे दिया है। मजदूरों का कचूमर निकलना और लीडरों की मौजमस्ती ... डेट्रियोट नगर में फोर्ड मोटर की जिस फैक्ट्री में मैं पहुँचा था वहाँ मैनेजमेंट - यूनियन एग्रीमेंट में फिर वर्क लोड में वृद्धि और छँटनी की धारायें थी। गुस्से से उबल रहे हजारों मजदूरों ने मैनेजमेंट और यूनियन लीडरों को घेरा हुआ था। उत्सुकतावश सरक-सरक कर मैं आगे पहुँचा ही था कि एक मजदूर ने दनादन गोलियों की बौछार शुरु कर दी। खून से लथपथ दो यूनियन लीडर और तीन मैनेजर गिर पड़े। भगदड़ मच गई। मैं भी सिर पर पाँव रख कर भागा।

अत्यधिक तीव्र व तीक्ष्ण कार्य ने अमरीका में गुस्सायें मजदूरों द्वारा कार्यस्थलों पर 1993 में दस लाख हिंसक कदमों को जन्म दिया। इनमें 1063 लोग मारे गये। मजदूरों द्वारा गोली चलाने की बढती घटनाओं ने सेक्यूरिटी सर्विस कम्पनियों के धन्धे में दिन दूनी रात चौगुनी वृद्धि की है। बौखलाये - घबराये मैनेजमेंट काडर के लोगों को सुरक्षा गार्डों के संग-संग मनोवैज्ञानिक चिकित्सकों की शरण लेनी पड़ रही है।

कार्य की यह तीव्रता और तीक्ष्णता और कोई गुल खिलाये इससे पहले ही मैं गरुड़ पर सवार हो स्वर्ग लोक जा रहा हूँ। तुम जिन्दा रहे तो फिर मिलने आऊँगा।

बहुत जल्दी में खत लिखा है इसलिये गलतियाँ होंगी ही। कमी-बेशी के लिये माफ करना।" ■

19 जून को सुबह दस बजे, 20 को शाम 5 बजे और 21 जून को रात 8 बजे इस अखबार के जून अंक पर मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी में चर्चा होगी। हर कोई इसमें भाग ले सकता है।

जो चाहते हैं कि यह अखबार ज्यादा लोग पढ़ें, ऐसे दो हजार मजदूर अगर हर महीने दो-दो रुपये दें तो इस अंक की तरह दस हजार प्रतियाँ फ्री बँट सकेंगी।

बखान : आप-बीती का, बातचीत में (6)

किसी एक मजदूर की बजाय इस बार आप - बीती वाली चर्चाओं में 12-13 केल्विनेटर वरकरों ने हिस्सा लिया। इस वजह से फैक्ट्री सम्बन्धित मसले चर्चाओं में छाये रहे और मजदूरों के निजी जीवन तथा निजी अनुभवों व विचारों के कई पहलू अनछूये-से रह गये। वैसे, प्रतिदिन 2400 तक फ्रिज बनाते केल्विनेटर मजदूरों में इक्के-दुक्के को छोड़ कर किसी के पास फ्रिज नहीं है।

★ केल्विनेटर में पाँच हजार मजदूर काम करते हैं। अधिकतर वरकर साइकिलों पर ड्यूटी आते हैं। साइकिल स्टैन्ड बहुत छोटा है। साइकिल रखने व लेने और टोकन लेने व देने में रोज दिक्कत होती है।

साइकिल स्टैन्ड के बाद दूसरे गेट पर आइडेन्टिटी कार्ड दिखा कर ही अन्दर जा सकते हैं। अन्दर जा कर टाइम आफिस से अपना कार्ड ले कर पँच करना और फिर वहाँ रखना होता है। इन दोनों जगहों पर भीड़-भाड़ व धक्कम-धक्का होती है।

शिफ्ट खत्म होने के बाद चौथी बार टाइम आफिस से कार्ड ले कर पँच करके वापस रखना होता है। फैक्ट्री से निकलते समय चोर की तरह तलाशी ली जाती है।

रोज-रोज की इस परेशानी को थोड़ा कम करने के लिये काफी वरकर शिफ्ट शुरु होने से आधा-पौन घन्टा पहले फैक्ट्री पहुँचते हैं और शिफ्ट छूटने के आधा-पौन घन्टा बाद फैक्ट्री से निकलते हैं।

केल्विनेटर वरकरों से मिलने कोई फैक्ट्री चले जाते हैं तो घन्टे-भर सेक्यूरिटी गेट पर इन्तजार के बाद आमतौर पर बिना मिले लौट जाते हैं।

★ कैन्टीन में पानी जैसी दाल और कच्ची रोटियाँ भी भीड़-भाड़ के कारण बिखरती रहती हैं। लन्च शुरु होने पर और फिर लन्च खत्म होने पर कार्ड पँच करने के संग-संग बाहर जाने के लिये सेक्यूरिटी गेट पर कार्ड जमा करने व वापस लेने का झँझट उठा कर केल्विनेटर के काफी वरकर बाहर खाना खाते हैं।

★ सौ मजदूरों के बाटे एक लैट्रिन भी नहीं आती। सीवर लाइन जाम हो जाती हैं और लैट्रिनें भर जाती हैं। पेशाब भी नाक बन्द करके करनी पड़ती है।

★ 1973 में ओवर टाइम कानून अनुसार डबल रेट से मिलता था। यह बन्द कर मैनेजमेंट ने बदले में छुट्टी देनी शुरु कर दी। 1980 में इसे बदल कर ओवर टाइम के लिये सिंगल रेट और 45 रुपये दिये जाने लगे। फिर इसे और कम करके सिंगल रेट तथा 25 रुपये कर दिया। केल्विनेटर में ओवर टाइम को अब बिल लगाना कहते हैं।

★ ग्रुप इन्सेंटिव, टाइम स्टडी, इन्डीविजुअल इन्सेंटिव, जान-पहचान वाले को भर्ती करवाने के एवज में और यूनियन से एग्रीमेंटों द्वारा केल्विनेटर मैनेजमेंट लगातार वर्क लोड बढाती रही है। एक डिपार्टमेंट में इस सिलसिले में 1976 में 122 पीस निर्धारित थे जो 1979 में 150 हुये, 1981 में 200। फिर 275 पीस को नोरमल प्रोडक्शन करार दिया गया। उसके बाद 350, फिर 400 और उसके बाद 1986 में 450 पीस...

★ प्रैस शॉप में मशीनों पर काम करते समय मजदूरों के हाथ कट जाना आम बात है। नट-बोल्ट तो गिरते रहते हैं, सिलेंडर तक गिरे हैं। बचाव के नाम पर हैलमेट एक बोझ के समान लद गया है। हैवी मशीनों के साथ कम्प्रेसर की शूँ-शूँ का कानफोड़ शोर ऊपर से है।

पेन्ट शॉप में पेन्ट और थिनर की गैस फेफड़ों में तो जाती ही है, आँख-नाक में चुभती भी खूब है।

हीट-ट्रीटमेंट डिपार्टमेंट और पेन्ट शॉप को गर्मियों में हीटर नर्क से भी बदतर बना देते हैं।

★ पहले केल्विनेटर में हर वरकर का साल में एक बार मेडिकल चैकअप होता था। पाँच साल से मैनेजमेंट ने वह भी बन्द कर दिया है।

और, अब फिर केल्विनेटर में छँटनी की चर्चा जोरों पर है...■

एक विद्यार्थी की बातें

. . . पत्र में अपनी आँखों देखा और कानों सुना हाल लिख रही हूँ। ये लेख 100% सत्य है। यहाँ की टीचरों की हरकतों की ये बातें 20% भी नहीं हैं। प्राइवेट स्कूलों की दशा फिर भी ठीक है पर सरकारी स्कूलों की दशा तो देखने लायक नहीं है। मैं प्रैस कालोनी की छात्रा रह चुकी हूँ। इस वक्त मेरा भाई टैन्थ के पेपर देकर फ्री हुआ है। इस साल यहाँ जो मुख्य टीचर अंग्रेजी की अध्यापिका, गणित की अध्यापिका, संस्कृत अध्यापक, भूतपूर्व विज्ञान की अध्यापिका जहाँ भी जायेंगे बच्चे 100% फेल होंगे। नाइन्थ क्लास में सन् 94 में 90% बच्चे फेल हुये। वो तो स्कूल का रिजल्ट था इसलिये स्कूल वालों ने 85% रिजल्ट ठीक कर दिया।

इंग्लिश की टीचर पीरियड लगने के 10 मिनट बाद आती हैं। पर्स रख कर राउन्ड लगाने चली जाती हैं। ये डायलॉग मारना कभी नहीं भूलती, "बच्चो इस पर्स को मैडम समझो और चुपचाप किताब निकाले।" वहाँ के बच्चों को ग्रामर के नाम पर 0 आता है। 90% बच्चे ट्यूशन के बलबूते पर पास होते हैं। मैथेमैटिक की टीचर गाइड के बिना एक सवाल नहीं कराती। जो चीज उन्हें आती हो और बच्चों को न आती हो तो ट्यूशन लगाने को कहती है। बुरा-भला कहने के सिवा कुछ नहीं आता। संस्कृत सर पहले तो ऐसे नहीं थे पर इस साल उन्होंने बच्चों का बेड़ा गर्क कर दिया। इसका कारण केवल यह है : नाइन्थ क्लास के एक लड़के ने पेपर के दौरान पकड़े जाने पर उनका कालर पकड़ लिया।

इस साल टीचरों की लापरवाही से बच्चे जो कुछ कर सकते थे उन्होंने किया। बरसात के दिनों में सिक्स्थ, सैवन्थ, नाइन्थ के लिये एक तरह से स्कूल बन्द होता है। टैन्थ क्लास के बच्चों की क्लास का नजारा मुझे देखने को मिला। कुछ लड़कियाँ ककड़ी खा रही थी। कुछ गाने गा रही थी। कुछ गप्प मारते-मारते हवा कर रही थी क्योंकि पंखे नहीं हैं। लड़कों की प्लानिंग हो रही थी। कुछ अपनी गर्लफ्रैन्ड की दास्तान सुना रहे थे। कुछ फ्रैन्डशिप करने के लिये बड़े लालायित नजर आ रहे थे। कुछ के अफेयर बड़े जोरों पर चल रहे थे...

पहले इस स्कूल की तारीफ किये नहीं थकते थे। आज वहाँ के टीचरों की लापरवाही के कारण ये माहौल है : नाइन्थ के एक लड़के के पीछे टैन्थ के लड़कों ने दो दिन तक स्ट्राइक के नारे लगाये। कई लड़कियाँ भी पेपर छोड़ने को तैयार हो चुकी थी। 1994 प्रैस कालोनी के लिये बहुत बुरा रहा है। यदि ये सब बातें पेपर में न छापी और इन सब के नामों के पोस्टर न लगाये गये तो ये स्कूल न रह कर रोमान्स प्लेस बन जायेगा . . .

15.5.95 – एक विद्यार्थी सीमा

{सम्पादकीय टिप्पणी : हँसना-बोलना, खेलना-कूदना, किस्से-कहानी कहना-सुनना, प्यार-मोहब्बत करना जीवन के लिये बढ़िया शिक्षा है। जानने-बूझने का कौतुहल और कल्पना की खुली उड़ानें जीवन के लिये बढ़िया शिक्षा है। दिक्कत यह है कि स्कूलों में इन पर पाबन्दी है। छात्र-छात्राओं का मिलना-जुलना, विचार-विमर्श और दोस्ती तक ढके-छुपे होते हैं। डाँट-फटकार, मार-पीट, लाँछन-बदनामी के डर विद्यार्थियों पर स्कूल और घर दोनों जगह मन्डराते रहते हैं।

बेहतर भविष्य के नाम पर बच्चों का बचपना व युवाओं का यौवन खा जाने वाले सरकारी हों चाहे प्राइवेट, स्कूल वो साँचे हैं जिनमें विद्यार्थियों को मन्डी में बिक्री के लिये ढाला जाता है, नौकर बनाने के लिये तराशा जाता है। अच्छा स्कूल वह कहलाता है जहाँ के ढले विद्यार्थी कम्पनियों - संस्थाओं में बड़े पुर्जे बनते हैं। और मन्डी में भाव ऊँचे लगें, बच्चे कमाऊ बनें इसके लिये माँ-बाप की सहमति से विद्यार्थियों को स्कूलों में अनुशासन नामी जिस कालकोठरी से गुजरना पड़ता है उसके बारे में विद्यार्थी बोलना शुरु करेंगे तभी समस्या फोकस में आयेगी। मजदूर बनने - नौकर बनने, कमाऊ पूत - पुत्री बनने, मशीन के पुर्जे बनने के क्या अर्थ हैं इस पर विद्यार्थी दोस्तो विचार करो। अपने आस-पड़ोस के नीरस जीवन और कार्यस्थलों पर नीरस काम के रिश्तों को समझने के लिये सर्विस कर रहे लोगों से कुरेद कर पूछो। थोड़ा ज्यादा कुरेदोगे तभी सही बात का पता चलेगा क्योंकि हमारी बड़ी संख्या पहले-पहल अपने नीरस - बोझिल - उबाऊ - बेमतलब काम की बड़ाई ही करती है, किसी अन्य से उन्नीस की बजाय इक्कीस दीखने के चक्कर में।

मैडम हों या सर, स्कूल अध्यापक भी फैक्ट्री में मशीनों पर रोज एक ही तरह की क्रिया करते मजदूरों की तरह हैं। वही अर्थहीन - बेमतलब पाठ साल-दर-साल पढाना किसी को भी पगला सकता है। टीचर - एजुकेशन वरकर और फैक्ट्री वरकर दोनों ही मन्डी के लिये माल, बिकाऊ माल तैयार करते हैं। फर्क यह है कि फैक्ट्री मजदूरों का कच्चा माल जहाँ लोहा, प्लास्टिक, कागज, कपड़ा-धागा हैं वहाँ अध्यापकों का कच्चा माल हाड़-माँस के बच्चे हैं। इसलिये फैक्ट्री मजदूर के अपने कच्चे माल के प्रति रुख से टीचरों का अपने कच्चे माल के प्रति रुख क्वालिटी में भिन्न होना चाहिये। शिक्षा फैक्ट्रियों के दो प्रमुख पीड़ितों, अध्यापकों और विद्यार्थियों को परस्पर शत्रुता की जगह एक-दूसरे की पीड़ा को समझने और मिल कर समस्याओं की जड़ों को चिन्हित करने व काटने की जरूरत है।

इस सम्बन्ध में विद्यार्थियों और अध्यापकों के पत्रों का हम स्वागत करेंगे।}■

जे. वी. इलेक्ट्रोनिक्स

मैं जे वी इलेक्ट्रोनिक्स लिमिटेड प्लाट नम्बर 163 सैक्टर 24 का इम्पलाई हूँ पर प्रबन्धकों ने मुझे आरोप-पत्र जे वी इलेक्ट्रोनिक्स प्राइवेट लिमिटेड के पैड पर दिया है। हमने प्रबन्धकों से पूछा कि ऐसा क्यों कर रहे हैं जब हमें आज तक जे वी इलेक्ट्रोनिक्स लिमिटेड की पेमेन्ट स्लिप भी देते हैं। यह पूछने पर कोई जवाब नहीं दे रहे कि उपरोक्त दोनों संस्थाओं में से हम किस संस्था के श्रमिक हैं। मैंने जब प्रमाणित स्थाई आदेश की प्रति माँगी तो प्रबन्धक ने चार सौ बीसी करते हुये जे वी इलेक्ट्रोनिक्स लिमिटेड के स्थाई आदेशों पर अपने हाथ से प्राइवेट लिमिटेड लिख दिया। ऐसे चार सौ बीसी के काम करते हुये इन्होंने इसके पहले भी कई श्रमिक निकाल दिये हैं और अब जवाब तक नहीं दे रहे हैं।

कारखाना अधिनियम धारा 58 का उल्लंघन करते हुये प्रबन्धक कई वर्ष से तीन शिफ्ट में साढे आठ घन्टे की ड्यूटी ले रहे हैं जबकि तीन शिफ्ट में केवल आठ घन्टे ड्यूटी का प्रावधान है। श्रम निरीक्षक के पास शिकायत करने पर तीन शिफ्ट के अन्दर 8 घन्टा ड्यूटी लेने का निर्देश श्रम निरीक्षक ने दिया है। प्रबन्धक फिर शरारत करके ए शिफ्ट, बी शिफ्ट, सी शिफ्ट किये हैं जिनका कोई टाइम नहीं दिखा रहे हैं। ऐसे चाल चल रहे हैं।

पेमेन्ट स्लिप में हमारा मौजूदा डी ए क्या है उसको नहीं लिख रहे हैं। प्लाट 163-164 के अन्दर प्रबन्धक कई संस्थायें चला रहे हैं और जे वी इलेक्ट्रोनिक्स लिमिटेड के मजदूरों से ही इनमें काम लिया जा रहा है। अन्याय करते प्रबन्धक इस प्रकार मजदूरों को बन्धुआ बनाये हुये हैं।

29.5.95 – निलम्बित मजदूर मदन मोहन

ललित फैब्रिक्स

13/6 मथुरा रोड़ स्थित ललित फैब्रिक्स में 118 परमानेन्ट, 70 कैजुअल और 50 ठेकेदारों के वरकर हैं। इस फैक्ट्री में परमानेन्ट वरकर दो यूनियनों में बँटे थे। मैनेजमेंट ने कैजुअल मजदूरों को दिसम्बर 94 से पेमेन्ट नहीं दी है और इस साल फरवरी से परमानेन्ट को भी वेतन नहीं दिया है। दोनों यूनियनों से तनखा दिलाने की कह-कह कर वरकर थक गये तब उन्होंने दोनों यूनियनों को छोड़ दिया और सब परमानेन्ट मजदूरों ने इक्ट्ठे हो कर मैनेजमेंट से अपना वेतन माँगा। एकजुट मजदूरों से पार पड़ती न देख कर ललित मैनेजमेंट ने 26 अप्रैल को अचानक तालाबन्दी कर दी। 27 अप्रैल को सुबह लॉक आउट का नोटिस देख ललित फैब्रिक्स के मजदूर जबरन फैक्ट्री में घुस गये और तब से रोज फैक्ट्री के अन्दर जा कर बैठते हैं। मजदूरों के समूह लेबर डिपार्टमेंट जा कर कानूनी खानापूर्ति भी कर रहे हैं। पुलिस की मदद से मैनेजमेंट तैयार माल निकाल ले गई है पर मशीनें फैक्ट्री में ही हैं।

कुतर्क

बाटा फैक्ट्री में कुछ मजदूरों को सस्पैन्ड हुये पाँच महीने हो गये तब कुछ अन्य मजदूरों ने उन्हें मदद करने के लिये चन्दा करने का निर्णय लिया। उन्होंने इसकी लिखित अपील अपने साथी मजदूरों से की। इस पर लीडरों ने कहा कि चन्दा करना सस्पैन्ड मजदूरों की मैनेजमेंट को कमजोरी दिखायेगा। और नुमाइन्दों ने सहायता को गुटबाजी की ठोस शक्ल दे कर चन्दे का गुपचुप विरोध किया। लेकिन बाटा मजदूरों ने अपने सस्पैन्ड साथियों के लिये 1640 रुपये एकत्र कर मानवीय भावना को मुखर किया।■

एक्सीडैन्ट ?

17 मई को मुजेसर स्थित पूजा इलेक्ट्रोप्लेटिंग में दो मजदूर मर गये और दो बेहोश हो गये। मुजेसर में ही नीची छत वाली तंग जगहों में पूजा जैसी पचास से अधिक जिंक व निक्कल प्लेटिंग वर्कशॉप हैं। जहरीले वातावरण में होती इस पूजा में मजदूरों के तन-मन प्रसाद में चढ़ते हैं। गैस मास्क और दस्तानों की क्या बात, इन वर्कशॉपों में एग्जास्ट फैन ही नहीं हैं। फन्ड - बोनस की क्या कहना, बाल मजदूरों - महिला श्रमिकों - पुरुष वरकरों को सरकारी न्यूनतम वेतन ही नहीं दिया जाता।

मुजेसर जैसी घनी बस्ती की सीवर लाइन और खुली नालियों में खुलेआम डाला जा रहा तेजाब व अन्य केमिकल मिला पानी गँगा - यमुना को प्रदूषण मुक्त कर रहा है।

और यह सब बड़ी-बड़ी फैक्ट्रियों द्वारा सस्ते में इलेक्ट्रोप्लेटिंग के लिये वर्कशॉपों में यह काम करवाने के अनिवार्य नतीजे हैं – भाषा में सुधार कर इन्हें एक्सीडैन्ट कहें।■

सतह के तले छिपी इबारत

याददाश्त में सामुहिक कदम (2)

क्रिया और यादों में परस्पर घनिष्ट सम्बन्ध हैं। इसलिये समाज का वर्तमान और भविष्य यादों से उल्लेखनीय तौर पर प्रभावित होते हैं। यादों बनाम यादों के प्रश्न पर समाज में तीव्र संघर्ष होते हैं। मजदूरों के लिये महत्वपूर्ण यादें कौनसी हैं? उन्हें कैसे संरक्षित रखना है? यादें कौन से सबक लिये हैं? चेतन होने के लिये, चेतन हो कर उठने के लिये सचेत तौर पर यादों का आदान-प्रदान करना आवश्यक है।

मजदूरों के सामुहिक कदमों में दो प्रक्रियायें गुन्थती हैं : 1) मजदूर अपनी पहलकदमी पर बार-बार कदम उठाते हैं; 2) मजदूरों के कदम जब गति पकड़ लेते हैं तब लीडर अथवा लीडर बनने की ख्वाहिश वाले अगुआई करने पहुँच जाते हैं।

मजदूरों का कोई हिस्सा अपने सामुहिक कदमों द्वारा जब कोई डिमान्ड हासिल कर लेता है और मैनेजमेंट को लगता है कि अन्य मजदूर वह डिमान्ड करेंगे तो मैनेजमेंट लीडरों के माध्यम से वह चीज अन्य मजदूरों को भी दे देती हैं। इससे होता यह है कि समूह जिसने अपने सामुहिक कदमों से डिमान्ड हासिल की उसके मजदूर अपनी ताकत और संघर्ष को अहमियत देते हैं जबकि अन्य मजदूर उस प्राप्ति के लिये लीडरों के सेहरा बाँधते हैं। केल्विनेटर के 10-12 वरकरों से बातचीत में यह काफी स्पष्टता से दिखाई दिया।

★ मशीन शॉप में **ग्राइन्डिंग मशीनों** पर काम करते समय उड़ती डस्ट से होती साँस की बीमारियों से मजदूर बहुत परेशान थे। इस बारे में कई बार कहने पर भी साहबों और लीडरों ने कुछ नहीं किया। 1985 में ग्राइन्डरमैनों ने तय किया कि जिस शिफ्ट की दिन की ड्यूटी होगी उसके वरकर इक्ट्ठे हो कर सप्ताह में एक बार सेफ्टी मैनेजर के पास जायेंगे और डस्ट से बचाव के प्रबन्ध की डिमान्ड करेंगे। मजदूरों ने एक तरफ समूह में जा कर मिलने का सिलसिला आरम्भ किया और दूसरी तरफ डिपार्टमेंट में राउन्ड पर आते सेफ्टी मैनेजर को घेर कर डस्ट उड़ाती ग्राइन्डिंग मशीनों के पास खड़ा करने लगे। तीन-चार महीने बाद, 1986 के आरम्भ में केल्विनेटर मैनेजमेंट ने डस्ट खींचने के लिये हर ग्राइन्डिंग मशीन पर एग्जास्ट फैन लगवाये।

★ **कम्प्रेसर डिवीजन** की फस्ट प्लान्ट की तरफ छत बहुत नीची है। इसमें कोई खिड़की या रौशनदान भी नहीं थे। यहाँ काम करते 300 मजदूर गर्मियों में तन्दूरी मुर्गे की तरह भुनने लगते। वरकर राहत के लिये कहते तो इन्चार्ज मजबूरी जाहिर करता और बाकी कोई सुनता नहीं था। इन मजदूरों ने एकजुट हो कर 1990 में कम्प्रेसर डिवीजन के मैनेजर का घेराव किया। तब केल्विनेटर मैनेजमेंट ने फर्श से डेढ फुट ऊपर छोटे-छोटे छेद बनाये और छत के एक हिस्से को थोड़ा ऊँचा कर वहाँ एजॉस्ट फैन लगाये।

★ वर्क लोड से दबे जा रहे केल्विनेटर वरकर राहत के लिये मैनेजमेंट से शीघ्र एनर्जी देने वाले **गुड़** की डिमान्ड काफी समय से कर रहे थे। 1986 में मशीन शॉप के मजदूरों ने इसके लिये समूहों में प्रोडक्शन मैनेजर के पास जाने का फैसला किया। 20-25 के समूहों में ड्रिलमैनों - हॉनिंगमैनों - ग्राइन्डरमैनों ने प्रोडक्शन मैनेजर के पास जाने का सिलसिला शुरु किया। तीन-चार महीने बाद मैनेजमेंट ने 4-6 वरकरों को गुड़ दे कर मामला रफा-दफा करने की कोशिश की। लेकिन मजदूरों ने समूहों में जा कर गुड़ डिमान्ड करने का सिलसिला जारी रखा। 1988 में जा कर मैनेजमेंट ने ड्रिलमैनों - हॉनिंगमैनों - ग्राइन्डरमैनों को महीने में दो किलो गुड़ देना माना। यह डिमान्ड अन्य डिपार्टमेंटों के वरकरों ने भी करनी शुरु कर दी। तब केल्विनेटर मैनेजमेंट ने लीडरों के सेहरा बाँधते हुये 1990 में पूरी फैक्ट्री के मजदूरों को गुड़ देना माना।

★ **हॉनिंग मशीन** पर काम करते वरकरों को हॉनिंग आयल में हाथ डुबाने पड़ते हैं जिससे हाथों पर दाने-दाने हो जाते थे। बरसों से इसे झेलते हॉनिंग मजदूरों ने 1983 में तय किया कि हफ्ते में एक दिन शिफ्टवाइज सब वरकर सेफ्टी मैनेजर से मिलेंगे। इस सिलसिले को पाँच-छह महीने हो गये तब केल्विनेटर मैनेजमेंट ने हॉनिंगमैनों को हाथों पर लगाने की क्रीम दी।

★ 1980 में **ग्राइन्डरमैनों** ने जूतों के लिये शिफ्टवाइज समूह में प्रोडक्शन मैनेजर के पास जाने का सिलसिला शुरु किया। आरम्भ में मैनेजर ने खूब डाँटा-फटकारा। लेकिन मजदूरों ने समूहों में उनके पास जाना जारी रखा। तीन साल तक लगातार यह चलता रहा तब 1983 में केल्विनेटर मैनेजमेंट ने ग्राइन्डरमैनों को जूते देने शुरु किये। अन्य डिपार्टमेंटों के मजदूरों ने भी जूते डिमान्ड करने शुरु कर दिये तब मैनेजमेंट ने लीडरों के सेहरा बाँध कर सब केल्विनेटर मजदूरों को 1988 में जूते देने शुरु किये।■

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे० के० ऑफसैट दिल्ली से मुद्रित किया। RN 42233 **पोस्टल रजिस्ट्रेशन** L/HR/FBD/73
सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी – 548 नेहरू ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।